मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 9, Issue - 1, Oct. - Dec. 2011

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

जलाओ दीये

जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

नई ज्योति के धर नये पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन-स्वर्ग छूले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण-द्वार जगमग,
उषा जा न पाए, निशा आ न पाए।

जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आए।

जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

– गोपाल दास नीरज

PRIDE OF SOCIETY

Sh. Devendra Jain

Born in the Mohkhed village of Chhindwara district Madhya Pradesh and been brought up in a religious family, Devendra Kumar Jain received values of Jainism and moral conduct in his early childhood itself. He has been a brilliant and sincere student through out with a strong academic record. He was awarded the Rural Intelligence Scholarship by the MP Government for securing 2nd position in the district. He is also a NTSE (National Talent Search Scholarship) scholar. After completing his graduation from Jabalpur Engineering College in 1984, he worked as a lecturer at SKG polytechnic Umred (Dist – Nagpur) where he gathered the Jain community and served as the secretary of the Jain Group.

He worked with Bombay Municipal Corporation in various capacities. Currently he is working as an Assistant Commissioner in Municipal Corporation of Greater Mumbai which is the largest Municipal Corporation in Asia. He looks after the G North ward and is in-charge of Health, Water Supply, Building, Factories, Schools, Environment, Roads, Estates, Property tax etc. He got selected through MPSC (Maharashtra Public Service Commission). He has also done an MBA with specialization in Human Resources. He also conducts personality development courses and has given lectures on this subject at various forums and Engineering colleges.

Shri Devendra Jain is a strict follower of moral values and Jainism. His brother, sister in law (Bhabhi) and niece have renounced this world and taken Jain Diksha. He is a strong proponent of team work and unity in family.

devpjain@gmail.com

YOUNG ACHIEVERS

Rajasi Chaware, Karanja (Maharashtra)
10th Maharashtra Board 100%

Apurva Jain, Jaipur (Rajasthan)
10th CBSE 10/10

Apurva Nandgaonkar
Kazipura Karanja Lad (Maharashtra)
10th Maharashtra Board 98.73%
NTSE Scholarship 2009, State Rank in Mah.

Chirping Sparrow
Year - 9, Issue - I

Chirping Sparrow is published by
Maitree Jankalyan Samiti
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com, samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984
http://maitreesamooh.blogspot.com

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of **Maitree Jankalyan Samiti.**

कॅरियर एण्ड करेक्टर

आज युवा अपने कॅरियर के प्रति जागरूक हो रहे हैं यह अच्छी बात है, लेकिन मनोविद् इस बात को लेकर थोडे चिंतित भी हैं। नौकरी की चिन्ता और बेहतर कॅरियर की आकांक्षा, दोनों ही बातें अपनी–अपनी जगह सही हैं, लेकिन यह चिन्ता और महत्त्वाकांक्षा युवाओं के जीवन और उम्र की स्वाभाविकता के एवज में किया गया एक महँगा सौदा है। मनोचिकित्सा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जे.एस.नेकी का कहना है कि छात्र कुछ समय से मानसिक अस्वस्थता के शिकार हो रहे हैं। उनकी कल्पनाशीलता कम हो रही है। उनकी याददाश्त पर भी इसका असर हो रहा है।

एक समय था जब सैकड़ों विद्यार्थी कवि और संवेदनशील साहित्यकार हुआ करते थे। छात्रों में विज्ञान की नई–नई विधाओं की ओर बढ़ने का उत्साह था, लेकिन आजकल ये सब पुरानी बातें हो चुकी हैं। छात्रों द्वारा उच्चस्तरीय कविताओं के लेखन में कमी आयी है। छात्र अब विज्ञान की जटिल गुत्थियों को सुलझाने में रूचि नहीं रखते। उन्हें देश में लोकतंत्र रहे या न रहे, देश विकसित हो या न हो, इस सबकी चिन्ता नहीं है। आज छात्रों में एक ही आकर्षण है प्रोफेशनल कोर्स, क्योंकि इसी में शानदार कॅरियर की सम्भावनाएं दिखती हैं। रचनात्मकता का आनन्द निरन्तर घट रहा है, जिसके फलस्वरूप युवाओं में वासना और अपराध प्रवृत्ति दिनोदिन बढ़ती जा रही है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् और वैज्ञानिक प्रो. यशपाल के इस कथन पर विचार करना जरूरी है कि कॅरियर और प्रतिस्पर्धा का बोझ विद्यार्थी में रचनात्मक/नैतिक मूल्यों को कम कर रहा है। महारथ हासिल करने, एक विधा में प्रवीण होने के फैशन ने छात्रों के जीवन को मशीनीकृत बना दिया है, उनमें जीवन के इन्द्रधनुषी रंग सूख रहे हैं। प्रो. यशपाल कहते हैं कि आज सारा जोर महज कॅरियर को लेकर है। इसके लिए सारी जिन्दगी को दाँव पर लगाना मैं ठीक नहीं मानता। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि पढ़ाई का मतलब एक बेहतरीन इंसान बनना होना चाहिए।

छात्र पढ़–लिखकर नैतिक मूल्यों से सम्पन्न इंसान बनें तो उनकी यह सफलता कहीं ज्यादा बेहतर सफलता है। बिना अच्छा इंसान बने कोई भी व्यक्ति जिन्दगी का आनन्द नहीं ले सकता।

युवावर्ग जितना अपने कॅरियर के प्रति सावधान है, गम्भीर है, उतना ही जीवन के प्रति जागरूक रहे। जीवन में सहजता, सरलता और संवेदनशीलता सतत् बनी रहे यही शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

हमारी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और उसकी उपज हमारी शिक्षा प्रणाली, हमें हर कहीं प्रतियोगिताओं की अंधी–दौड में झोंक रही है। घर–परिवार से लेकर आंगन और बाजार तक तथा स्कूलों से लेकर कार्यालयों तक में बैठे हुए भी हम होड़ की दौड़ करते हैं या उसके मंसूबों के महल बनाते–गिराते रहते हैं।

हम केवल अपना मुकाम पाने के लिए बेतहाशा दौड़ जाना चाहते हैं – इसकी शिक्षा हम अपने स्कूलों में रोज पा रहे हैं और मासूम बचपन को प्रतिक्षण झोंक रहे हैं इस अंधी दौड की भट्टी में।

हमारे स्कूल जेलखाने या आरामघर बनकर रह गए हैं। सरकारी स्कूलों में फैल रहा निकम्मापन उन्हें आरामघर में बदल चुका है और ऊँची फीस के कॉन्वेंट या एकेडमी काफी कुछ भव्य–भवनों वाले जेलखाने हैं, जहां थोपे गए अनुशासन की लोहे की सलाखें हैं, कमरों से लेकर मैदान तक बस एक ही चर्चा की ध्वनि उठती रहती है चारों ओर – टेस्ट, परीक्षा, अंक, रैंक, मेरिट और पोजीशन । हमें अपनी कक्षा का हर साथी दोस्त तो कम लगता है प्रतियोगी अधिक। हमें किस–किस को पछाड़कर आगे निकलना है बस यही एक दर्शन (फिलॉसफी) है हमारी शिक्षा का।

सृष्टि में तो हर वस्तु और हर एक व्यक्ति बस अपने प्रकार का एक अकेला ही होता है। हर एक की अपनी निजी क्षमताएं भी होती हैं और खूबियाँ भी। कोई किसी से, किसी एक ही बात में होड़ करके हमेशा आगे कैसे निकल सकता है ? जब हम ऐसे में अपनी सारी आंतरिक क्षमता दाँव पर लगा देने पर भी किसी दूसरे से आगे नहीं निकल पाते तो हीन भावना का शिकार हो जाते हैं। दूसरी ओर ढेर सारे सुविधाहीन या अवसरहीन बच्चों को अपने से पीछे घिसटते देखकर सुविधाभोगी सम्पन्न बालक, सर्वश्रेष्ठता के दर्प (सुपीरिओरिटी कॉम्पलेक्स) से ग्रसित हो जाते हैं। कुल मिलाकर शिक्षा के क्षेत्र में कॅरियर की यही दौड़ फिर समाज के हर क्षेत्र में परिलक्षित होती है। हमें इससे ऊपर उठकर स्वस्थ प्रतियोगिता के चलते अपनी क्षमता और अपनी संस्कृति के अनुरूप अपने कॅरियर का चुनाव करना चाहिए तभी हम अच्छे से जी सकेंगे।

-मुनि क्षमासागर

YOUNG ACHIEVERS 2011

Ankur Sethi, Jodhpur
Rajasthan
10th CBSE 9.6/10

Riya Chaugule Jaikumar
Belgaum, Karnataka
10th Board 95.84%

Tej Chaugule Jaikumar
Belgaum, Karnataka
10th Board 95.52%

Manish D, Kanchipuram
Tamil Nadu
10th Board 94.6%

Nimriti Jain, Indore
Madhya Pradesh
10th CBSE 9.4/10

Swarupa Khandare, Karanja Lad
Maharashtra,
10th Board 93.8%

Shubam Jain, Jhansi
Uttar Pradesh
10th CBSE 92%

Arpita Gangwal, Amravati
Maharashtra,
10th M.P. Board 90.73%

Deeksha Jain, Vidisha
Madhya Pradesh
10th CBSE 85.5%

Chandrapal Jain, Shahada
Maharashtra
10th Board 81.64%

Varsha V Doddamani
Dharwad, Karnataka
12th Board 93.83%

Nainy Jain, Jabalpur
12th CBSE 90.4%,IIT JEE
AIR 4419; AIEEE AIR 746

Mohit Jain, Tonk, Rajasthan
IIT JEEE AIR 1135; AIEEE
AIR 1726; ISAT 630

Divyanshu Bhuta
Pratapgarh, Rajasthan
12th Board 85.85%

Achin Jain, Jethana
Rajasthan, IIT-JEE
AIR7933; AIEEE AIR 6389

Praneet Jain, Banaras, U.P.
12th CBSE 83%,
MP PET - 1664

Noopur Jain, Vidisha
12th Board 79.6%
MP PET - 3223

Prachi Jain, Indore
12th Board 92.4%
CPT 1 Qualified

Mahika Jain, Mhow, M.P.
12th CBSE 89.8%
CPT 1 Qualified

Sangeetha S, Chennai
12th Board 75%

Avish Jain, Jaipur
12th CBSE 79%
CPT 61.5%

Akshita Jain, Chanderi
Rajasthan, 12th Board
78.15%

Prateek Suraksha Bhushan
Madhya Pradesh,
B. Tech GPA 8.6/10
GATE AIR 791

Arpita Jain, Bhopal
Madhya Pradesh
B.E. Honours 82%

YOUNG ACHIEVERS 2011

Ankit Jain, Tonk
Rajasthan, B.Tech IT BHU
GPA 8.17/10

Prashu Jain, Chanderi
Madhya Pradesh, B.Tech
79.47%, Placed in TCS

Megha Jain, Gowadiya
Madhya Pradesh
B.Tech. Honours, 76.06%

Ankita Sethi, Jodhpur
Rajasthan
B.E., 75.73%

Achal Jain, Vapi
Gujarat
B. Tech (SA) 75.30%

Ankita Jain, Begumganj
Madhya Pradesh
B.Tech Honours 75.30%

Sakshi Jain, Vidisha
Madhya Pradesh,
B.Tech 74.82 %

Shradhdha Jain, Indore
Madhya Pradesh
B. Tech 73.00%

Kavita Jain, Ujjain
Madhya Pradesh
CA, 54.75%

Vivek Jain, Kota
Rajasthan, B.Com
68.00% CA-PCC

Nisarg Shah, Vadodara
B.Pharm. 65%, GPAT AIR 4382
NIPER AIR 1597

Aditya Jain, Jaipur
Rajasthan
MBA 61%

Parul Diwakar Jain
Saugor, M.P.
GPAT. AIR 3982

Santosh Jain, Jaipur
JRF in Jainism
2nd Rank

Simmi Jain, Beawar
Rajasthan
M. Com. 77.78%
CA Final AIR 52

Divya Jain, Bundi
Rajasthan
M. Pharm. 67.53%
(SRF)

Juilee Kalamlar, Jintur
Maharashtra
10th Board 96%

Ekta Jain, Rahatgarh
Madhya Pradesh
10th CBSE 6.4/10

Saumya Jain, Panna, M.P.
12th Science CBSE 88.2%
AIEEE AIR 6249

Sachin Jain, Shivpuri
Madhya Pradesh
MP PSC Qualified (ADPO)

Jainam Shah, Anand
Gujarat
BDS - 67.94%

Nikhil Jain, Gaya
Bihar, 12th Science
CBSE 90%

Surbhi Dongaonkar, Pusad
Maharashtra, 12th Science
Maharashtra Board 89.17%

Priyanka Jain, Guna
Madhya Pradesh
12th Science MP Board 88%

Nikhil Jain, Newai
Rajasthan
12th Board 84.41%

Chintan Shah, Ahmadabad
12th Commerce 94.29%;
1st in Ahmadabad Centre
CPT (C.A.) - 175/200

Ruchi Jain, Jaipur
12th CBSE 91.00%,CPT 1 -
17th in Jaipur, AIR-29th

Chirag Jain, Jaipur
Rajasthan
12th Board 80%

Aditi Jain, Kekri
Rajasthan
BBM 81.54%

आपके प्रश्न

Q. क्या हिन्दी में भक्तामर पढ़ने की अपेक्षा संस्कृत में भक्तामर स्तोत्र पढ़ने का महत्त्व अधिक है अथवा भावों को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए अर्थात् उसे पढ़ें जिसे पढ़ने में अधिक मन लगे ?

A. भक्तामर मूलरूप से संस्कृत भाषा में ही लिखा गया है इसलिए भाषा की अपेक्षा संस्कृत में ही पढ़ना चाहिए। उसका हिन्दी अनुवाद मात्र अनुवाद है, जो कि मूल से भिन्न हो सकता है और है भी। किसी भी स्तुति को पढ़ने में उसका अर्थ उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना कि श्रद्धा पूर्वक उसे पढ़ा जाना। पढ़ते समय अर्थ भले ही समझ में नहीं आ रहा पर मैं भगवान की स्तुति कर रहा हूँ, यह श्रद्धा ही उस स्तुति को महत्त्वपूर्ण बनाती है। मंत्रो के समान संस्कृत में स्तुति भी पढ़ने से वैसे ही प्रभाव करती है, जैसे कि स्तुति स्वयं मंत्र हो जाती है। इसलिए मूल भाषा में ही स्तोत्र पढ़ा जाना उपयोगी है।

प्रमिला जैन, पथरिया

Q. जब हमारा उद्देश्य डगमगाने लगे और शंका उत्पन्न हो जाये कि सर्विस लगेगी या नहीं? इतना खर्च करने के बाद भी सर्विस नहीं लगेगी तो ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए? मेरी हमेशा नेगेटिव सोच रहती है कि हर चीज नेगेटिव हो सकती है। कारण बतायें ?

A. प्रशासनिक सेवा में तकरीबन 600 पदों के लिए परीक्षाएँ होती हैं जिनके लिए 3 लाख से अधिक आवेदन आते हैं। अन्तिम रूप से परीक्षा के बाद चयन होने वाले 600 परीक्षार्थियों को छोड़कर बाकी सभी असफल होते हैं। इस कठोर सच को हर परीक्षार्थी जानता है। इस तरह की किसी भी परीक्षा के लिए हर परीक्षार्थी को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। लेकिन इससे निराश होने का कोई कारण नहीं है। मैं चाहे जितनी मेहनत कर लूं पर मुझे सफलता नहीं मिलेगी, मैं कभी सफल नहीं हो पाऊंगी, इस तरह के नेगेटिव Thoughts हमारे क्रियाकलापों को बाधित और आशाओं को कुंठित करते हैं। दुनिया में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने वाले कामयाब व्यक्ति जीवन में असफल हुए हैं लेकिन निराश होने की बजाय वह सतत् प्रयत्न में लगे रहे और एक दिन सफल होकर कामयाब इन्सान कहलाये। नकारात्मक प्रवृत्ति निराशा की जननी है, वह अपने जाल में व्यक्ति को उलझाकर उसकी रचनात्मक शक्ति को कमजोर बनाती है। ऐसे व्यक्ति की सकारात्मक सोच धीरे–धीरे पंगु हो जाती है। सकारात्मक सोच बनाए रखने के लिए निम्न उपाय अपनायें तो निश्चित ही सफलता मिलेगी।

1. बेमतलब की बातों से बचें– अपने को आप बेमतलब की बातों से बचायें । आप उन लोगो से दूर रहें जो आदमी सफलता से पहले तरह–तरह के संदेहो व बाधाओं को गिनना शुरू कर देते है। आप को कोई भी कार्य करना है तो उसकी सफलता या असफलता भी आपके हाथों में है। असफलता के हल्के अहसास से आप अपना मूड खराब न करें। खुली हवा में घूमकर आने के बाद नये उत्साह से फिर से काम मे लग जायें। जरा–जरा सी बात पर गुस्सा करके आप किसी का कुछ नहीं अपना ही नुकसान करते हैं। आप की स्वयं की ऊर्जा इन अनावश्यक बातों से नष्ट होती है।

2. आत्म विश्वास न खोएँ – कई बार लगातार विपरीत परिस्थितियों का सामना करते करते व्यक्ति अपना आत्मविश्वास खो देता है। यदि ऐसी स्थिति आपके सामने आती है तो इस आत्मविश्वास को पुनः जागृत करने की जरूरत है। एक छोटा बच्चा चलना सीखने के दौरान कितनी बार गिरता /उठता है फिर भी वह चलने लगता है। अगर वह लगातार कोशिश के प्रति आत्मविश्वास न रखे तो कभी खड़ा होकर चल नहीं सकता। इसलिए असफल होने की आशंकाओं से घबराने की जरूरत नहीं है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आप मन में यह भावना रखें कि मुझे सफल होना हैं, मैं इस मुसीबत को पार कर लूंगा। मैं यह कार्य जरूर कर लूंगा, इससे मन को सुदृढ़ बनाएं।

3. अपने को दूसरों से कमतर मत आंको – आजकल दूसरों से अपनी तुलना करने की आदत का इतना अधिक विस्तार हो गया है कि लोग इससे हटकर कुछ सोच ही नहीं पाते। आपका प्रयोग ऐसा हो कि विपरीत स्थितियों से आपके लिए संबल मिले। अगर आप दूसरों की सफलता में अपने को कमतर आंकेंगे, तो अपने कार्य के प्रवाह को रोक देंगे। और सकारात्मक विचार के बजाय नकारात्मक विचार आप पर हावी हो जाऐंगे। सदा सफलता के द्वारा खोलने के लिए सकारात्मक बदलाव लाईये। हम क्या हैं, हम सफल होंगे कि नहीं, ऐसा सोचने की बजाय इस बात का विशलेषण करें कि हमारे प्रयत्नों की दिशा कैसी हो? और हम क्या बन सकेंगे? यह लक्ष्य निर्धारित करें और उस ओर सम्पूर्ण निष्ठा के साथ चल पड़ें। आप जीवन में न केवल सफल ही होंगे बल्कि जीवन के प्रति संतुष्ट भी होंगे। आप सकारात्मक सोच रखें, सफलता अवश्य मिलेगी। आकांक्षा सिंघई, मंडी बामोरा

यदि आपको कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा।

रेत पर नहीं लिखी जाती अच्छी बातें

एक शहर में रहने वाले दो युवकों में गहरी मित्रता थी, उनमें से एक का नाम मोहन और दूसरे का सुरेश था। वे दोनों हर काम साथ मिलकर करते थे। एक बार वे दोनों किसी काम से कहीं जा रहे थे। जब वे पथरीले इलाके से गुजर रहे थे तो किसी बात पर उनमें बहस शुरू हो गई। दोनों एक–दूसरे की बात मानने तैयार नहीं थे। इससे बहस बढ़ती गई और अचानक आवेश में आकर सुरेश ने मोहन को चांटा मार दिया। इस पर मोहन भन्ना गया और गुस्से में आकर उसने भी हाथ उठा लिया, लेकिन उसने कुछ सोचकर अपना हाथ रोक तो लिया, लेकिन गुस्सा शांत नहीं हुआ था। वह इसे दूर करने का उपाय सोचने लगा और एक पहाड़ी पर चढ़ गया। उसे पास ही एक तालाब दिखाई दिया तालाब के किनारे पहुंचकर उसने रेतीली जमीन पर अंगुली से लिखा – आज मेरे प्रिय दोस्त ने गुस्से में आकर मुझे चांटा मारा। यह उसने गलत किया, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। सुरेश ने उसे पढ़ा, परन्तु कहा कुछ नहीं।

इससे बाद में दोनों साथ–साथ आगे बढ़ गए, लेकिन अभी दोनों में बातचीत शुरू नहीं हुई थी। आगे एक नदी पड़ी मोहन ने सोचा कि चलकर नदी में स्नान करना चाहिए। इससे रास्ते की धूल भी साफ हो जाएगी, ऐसा सोचकर उसने नदी में छलांग लगा दी। ठंडे पानी में तैरने में उसे आनन्द आ रहा था। वह तैरते–तैरते गहरे पानी में चला गया तभी नदी में एक भंवर उठी और उसने मोहन को अपनी चपेट में ले लिया। वह डूबने लगा उसे डूबते देख सुरेश तुरन्त नदी में कूदा और उसे सुरक्षित बाहर निकाल लाया। बाहर निकालकर उसने मोहन के पेट से पानी निकाला। शीघ्र ही मोहन होश में आ गया। वह बिना कुछ बोले उठा और नजदीक की एक चट्टान के पास पहुंचकर उसने उस पर पत्थर के टुकड़े से उकेरा– मेरे प्रिय दोस्त ने आज मुझे डूबने से बचाया, उसने सही किया, एक मित्र को ऐसा ही करना चाहिए।

सुरेश ने इसे पढ़ा, उसने झिझक छोड़कर मोहन से पूछा – जब मैंने तुम्हें चांटा मारा तो तुमने रेतीली जमीन खोजकर उस पर लिखा। अब मैंने तुम्हें बचाया तो तुमने रेतीली जमीन के बजाय चट्टान पर जाकर लिखा। तुमने ऐसा क्यों किया? मोहन बोला–क्योंकि जब कोई व्यक्ति आपको दुःख पहुंचाता है तो उस बात को हमेशा ऐसी जगह लिखना चाहिए जहां कि वक्त की हवाएं उसे मिटा दें और समय के साथ आप उन्हें भूल जाएं। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति आपके लिए अच्छा करे तो उसे चट्टान पर उकेरना चाहिए ताकि आंधी–तूफान भी उसे मिटा न सकें और समय के साथ आप उन्हें भूल न जाएं।

वाह! क्या बात है! यही है सही तरह से तनाव रहित जीवन जीने की फिलॉसफ़ी । हम सभी को इस फिलॉसफ़ी को अपनाना चाहिए, लेकिन हम करते हैं इसका उल्टा, यदि किसी ने हमारे अच्छे के लिए या हमारे हित में काम किए होते हैं तो हम उसे रेत पर लिख देते हैं यानि उसे जल्दी भुला देते हैं। इसके विपरीत कोई गलती से भी हमें दुःख पहुंचा दे तो हम उसे चट्टान पर लिख देते हैं यानी हम भूल नहीं पाते, यही कारण है कि भुला दी जाने वाली बातें हमें रह–रहकर याद आती हैं और हमारे अच्छे–भले मूड को खराब कर देती हैं। इसी को खुन्नस पालना भी कहते हैं जिसे हम यदा–कदा उस व्यक्ति पर निकालते भी रहते हैं। यह प्रवृत्ति सही नहीं है। इसके कारण कई बार घनिष्ठ संबंध भी टूट जाते हैं और व्यक्ति को बड़े नुकसान उठाने पड़ते हैं। यदि आप ऐसी स्थितियों से बचना चाहते हैं तो किसी कोने में उकेरते जाएं, ताकि यदि वह कोई गलती कर बैठे तो उसके अच्छे काम याद आ जाएं। तब आप उसके द्वारा की गई भूल को भुलाकर उसे क्षमा कर देंगे। इससे आपके संबंधों में कभी भी दरार नहीं आएगी बल्कि वे और प्रगाढ़ हो जाएंगे।

इसलिए बेकार की बातों को याद रखना भूलें, हमेशा अच्छी बातों, अच्छे पलों को याद रखें और बुरी बातों, बुरे पलों को भुला दें इससे आप बेमतलब के तनावों से बच जाएंगे और सकारात्मक रहकर अपना पूरा ध्यान अपने काम में लगा पाएंगे।

मनीष शर्मा

INTEGITY

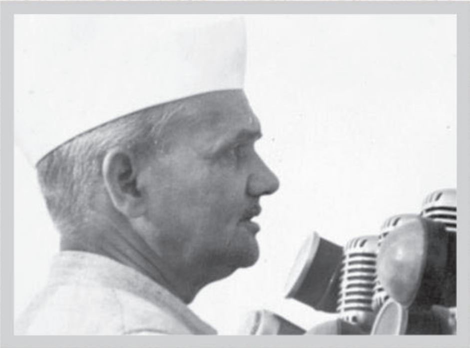

Lal Bahadur Shastri rose from poor circumstances to become the second Prime Minister of India. Added to the personal challenge of matching the stature of his predecessor, Pandit Nehru, a leader of international repute, Lal Bahadur Shastri had to face a number of obstacles when he assumed office. Slowly and steadily and with his characteristic cool, not only did he measure up to all these challenges, but he also demonstrated that he could be tough when the occasion demanded.

Although his physical stature was small, he was the man of great courage, will, and integrity. Lalbahadur Shastri successfully led India during the 1965 war against Pakistan. Because of his great qualities he was and is a great inspiration.

The following story shows the integrity of the great man; rarely to be seen in today's world.

While he was the Prime Minister of India his son approached him with great joy and enthusiasm. The son said, "Father today I have received an appointment letter from this big company and they are offering me a huge salary."

Lal Bahadur Shastri had a close look at the appointment letter. There was a smile on his face and he said, "You have not received the appointment letter on your own merit." He continued, "Nobody would offer you such appointment with such handsome salary. The only reason for the letter is that you are the son of the Prime Minister of India."

Lalbahdur Shastri asked his son to deny the proposal as it would mean the acceptance of bribe.

श्रद्धा

रामकृष्ण परमहंस ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं थे, शायद कच्ची पहली या दूसरी फेल, वहीं पर केशवचन्द्र जी प्रकांड विद्वान और तर्क के जादूगर, और तार्किक स्वभावतः नास्तिक होता है तो वो भी थे। रामकृष्ण जी का जितना अडिग विश्वास परमात्मा की सत्ता में था उतना ही केशवचन्द्र जी उसको डिगाने की कोशिश किया करते थे। एक रोज तय हो गया कि अगले दिन सुबह ही दोनों के बीच शास्त्रार्थ होगा और रामकृष्ण जी भी तैयार, स्वभावतः सरल थे सो तैयार हो गए।

अगले ही दिन सुबह... खचाखच भरी भीड़ में केशवचन्द्र जी ने वो तर्क दिए कि सबको आनन्द आ गया , उन्होंने ईश्वर के नहीं होने के इतने ठोस तर्क दिए कि लोग तालियां बजा उठे। स्वयं परमहंस भी बच्चों की तरह तालियां बजाते रहे। जैसे–जैसे तर्क यह प्रतिपादित करता गया कि ईश्वर नहीं है, वैसे–वैसे भीड़ की तालियां बढ़ती गईं और केशवचन्द्र जी भी खुशी से मन ही मन फूले जा रहे थे, परन्तु यह क्या ? परमहंस जो भीड के साथ–साथ उनके समर्थन में तालियां बजा रहे थे और अब तो वाह... वाह भी करने लगे । जब केशवचन्द्र के सब तर्क खत्म हो गए तब बारी आई परमहंस के तर्क देने की यानि अब उनको सिद्ध करना था कि ईश्वर है, अब केशव परमहंस को हँसता देखकर बोले– आप हार रहे हो यह जानकर भी आप हँसे जा रहे हो ? आप कैसे सिद्ध करेंगे ? आप तो तालियां बजा–बजा कर स्वयं ही मेरा समर्थन करते जा रहे हैं ?

परमहंस बोले – केशव, अब मुझे हराने का कोई उपाय तुम्हारे पास नहीं है। इस बात पर केशवचन्द्र बड़े नाराज हुए वो बोले– अब तो हद हो गई, आप अगर मेरी बात से सहमत नहीं थे तो इतना खुश होकर तालियां बजाने की क्या जरूरत थी ?

परमहंस बोले – वो इसलिए कि तुमने इतने अकाट्य तर्क दिए, इतनी प्रखर बुद्धि के मनुष्य को सिवाय परमात्मा के कोई बना भी नहीं सकता । तुम्हारे तर्क सुनकर तो मुझे परमात्मा पर और भी ज्यादा यकीन हो गया।

बाद में केशवचन्द्र ने अपनी आत्मकथा में लिखवाया कि मैं जीवन में सिर्फ एक बार ऐसे आदमी से हारा हूँ , जिसने मेरे विरूद्ध एक भी बात नहीं कही।

अनुकम्पा

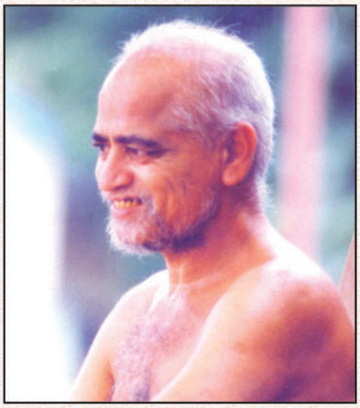

सागर से विहार करके आचार्य महाराज संघ–सहित नैनागिरि आ गए। वर्षाकाल निकट था, पर अभी बारिश आई नहीं थी। पानी के अभाव में गांव के लोग दुखी थे। एक दिन सुबह–सुबह जैसे ही आचार्य महाराज शौच–क्रिया के लिए मन्दिर से बाहर आए, हमने देखा कि गांव के सरपंच ने आकर अत्यन्त श्रद्धा के साथ उनके चरणों में अपना माथा रख दिया और विनत भाव से बुन्देलखण्डी भाषा में कहा, ''हजूर! आप खों चार मईना इतईं रेने हैं और पानू ई साल अब लों नई बरसो, सो किरपा करो, पानू जरूर चानें है''

आचार्य महाराज ने मुस्कराकर उसे आशीष दिया आगे बढ़ गए। बात आई–गई हो गई, लेकिन उसी दिन शाम होते–होते आकाश में बादल छाने लगे। दूसरे दिन सुबह से बारिश होने लगी। पहली बारिश थी। तीन दिन लगातार पानी बरसता रहा। सब भीग गया। जल मन्दिर वाला तालाब भी खूब भर गया।

चौथे दिन सरपंच ने फिर आकर आचार्य महाराज के चरणों मे माथा टेक दिया और गद्‌गद् कंठ से बोला, ''हजूर! इतनो नोई कई ती, भोत हो गओ, खूब किरपा करी।''

आचार्य महाराज ने सहज भाव से उसे आशीष दिया और अपने आत्म–चिंतन में लीन हो गए। मैं सोचता रहा कि, इसे मात्र संयोग मानूँ या आचार्य महाराज की अनुकम्पा का फल। जो भी हुआ, वह मन को प्रभावित करता है।

नैनागिरि, 1982

चित्रांकन

उसने कहा –
जीवन में
एक चित्र ऐसा बनाना
कि जिसमें सब ओर
खुला आकाश हो
कि अपनी सीमाएँ
स्वयं निर्धारित करता
काई महासागर हो,
कि अपने ही बनाये
किनारों के बीच
बहती नदी हो,
कि अपने ही हाथों
अपना सर्वस्व लुटाता
एक वृक्ष हो
और समूचे आकाश को
अपने गीतों से
भर देने वाली
कोई चिड़िया हो,
जरूर बनाना
जीवन का ऐसा चित्र,
जिसमें जीवन और जगत के बीच
सीधा सम्बन्ध हो।

PAINTING

He said, 'Please
paint a canvas
with borders of the sky;
a sea endless
in its own boundary;
a river that flows
between the two banks
of its own making ;
a tree that gives away
with both hands
its tree-life;also
a bird filling the sky
with its own sweet singing.
Please do make
a painting of life
linking the universe
to life's heartbeat.'

मुनि क्षमासागर
Translated by Sunita Jain
मुक्ति से साभार

KEEP THE SPARK ALIVE...

EXCERPTS FROM CHETAN BHAGAT'S COMMENCEMENT ADDRESS AT SYMBIOSIS UNIVERSITY, 2008

There are few days in human life when one is truly elated. The first day in college is one of them. When you were getting ready today, you felt a tingling in your stomach. What would the auditorium be like, what would the teachers be like, who are my new classmates - there is so much to be curious about. I call this excitement, the spark within you that makes you feel truly alive today. Today I am going to talk about keeping the spark shining. Or to put it another way, how to be happy most, if not all the time.

Where do these sparks start? I think we are born with them. My 3-year old twin boys have a million sparks. A little Spiderman toy can make them jump on the bed. They get thrills from creaky swings in the park. A story from daddy gets them excited. I see students like you, and I still see some sparks. But when I see older people, the spark is difficult to find. That means as we age, the spark fades. People whose spark has faded too much are dull, dejected, aimless and bitter.

So how to save this spark?
Imagine the spark to be a lamp's flame. The first aspect is nurturing - to give your spark the fuel, continuously. The second is to guard against storms. To nurture, always have goals. It is human nature to strive, improve and achieve full potential. In fact, that is success. It is what is possible for you. It isn't any external measure - a certain cost to company pay package, a particular car or house. Most of us are from middle class families. To us, having material landmarks is success and rightly so. When you have grown up where money constraints force everyday choices, financial freedom is a big achievement. But it isn't the purpose of life. If that was the case, Mr. Ambani would not show up for work. Shah Rukh Khan would stay at home and not dance anymore. Why do they do it? What makes them come to work everyday? They do it because it makes them happy. They do it because it makes them feel alive. Just getting better from current levels, feels good. If you study hard, you can improve your rank. If you make an effort to interact with people, you will do better in interviews. If you practice, your cricket will get better. You may also know that you cannot become Tendulkar, yet. But you can get to the next level. Striving for that next level is important.

Nature designed with a random set of genes and circumstances in which we were born. To be happy, we have to accept it and make the most of nature's design. Goals will help you do that. I must add, don't just have career or academic goals. Set goals to give you a balanced, successful life. I use the word balanced before successful. Balanced means ensuring your health, relationships, mental peace are all in good order. There is no point of getting a promotion on the day of your breakup. There is no fun in driving a car if your back hurts. Shopping is not enjoyable if your mind is full of tensions.You must have read some quotes - Life is a tough race, it is a marathon or whatever. No, from what I have seen so far, life is one of those races in nursery school, where you have to run with a marble in a spoon kept in your mouth. If the marble falls, there is no point coming first. Same with life, where health and relationships are the marble. Your striving is only worth it if there is harmony in your life. Else, you may achieve the success, but this spark, this feeling of being excited and alive, will start to die.

One last thing about nurturing the spark - don't take life seriously. One of my yoga teachers used to make students laugh during classes. One student asked him if these jokes would take away something from the yoga practice. The teacher said - don't be serious, be sincere. Life is not to be taken seriously, as we are really temporary here. We are like a pre-paid card with limited validity. If we are lucky, we may last another 50 years. And 50 years is just 2,500 weekends. Do we really need to get so worked up? It's ok, bunk a few classes, goof up a few interviews, fall in love. We are people, not programmed devices.

I've told you three things - reasonable goals, balance and not taking it too seriously that will nurture the spark. However, there are four storms in life that will threaten to completely put out the flame. These are disappointment, frustration, unfairness and loneliness of purpose. Disappointment will come when your effort does not give you the expected return - if things don't go as planned or if you face failure. Failure is extremely difficult to handle, but those

that do come out stronger. 'What did this failure teach me?' - is the question you will need to ask. You will feel miserable. You will want to quit, like I wanted to when nine publishers rejected my first book. Some students kill themselves over low grades, how silly is that? But that is how much failure can hurt you. But it's life. If challenges could always be overcome, they would cease to be a challenge. And remember - if you are failing at something, that means you are at your limit or potential. And that's where you want to be.

Disappointment's cousin is frustration, the second storm. Have you ever been frustrated? It happens when things are stuck. From traffic jams to getting that job you deserve, sometimes things take so long that you don't know if you chose the right goal. Frustration saps excitement, and turns your initial energy into something negative, making you a bitter person. How to deal with it? By having a side plan - something as simple as pleasurable distractions in your life - friends, food, travel can help you overcome it. Remember, nothing is to be taken very seriously. Frustration is a sign somewhere, you took it too seriously.

Unfairness - this is hardest to deal with, but unfortunately that is how our country works. There are so few opportunities in India, so many stars need to be aligned for you to make it happen. Merit and hard work is not always linked to achievement in the short term, but the long term correlation is high, and ultimately things do work out. But realize, there will be some people luckier than you. Let's be grateful for what we have and get the strength to accept what we don't. I have so much love from my readers that other writers cannot even imagine it. However, I don't get literary praise. It's ok. Don't let unfairness kill your spark. Finally, the last point that can kill your spark is isolation. As you grow older you will realize you are unique. When you are little, all kids want Ice cream and Spiderman. As you grow older to college, you still are a lot like your friends. But ten years later and you realize you are unique. What you want, what you believe in, what makes you feel, may be different from even the people closest to you. This can create conflict as your goals may not match with others. And you may drop some of them. But in doing that, the spark dies. Never, ever make that compromise. Love yourself first, and then others. While you cannot avoid these storms, as like the monsoon they will come into your life at regular intervals. You just need to keep the raincoat handy to not let the spark die.

I hope not just you, but my whole country will keep that spark alive, as we really need it now more than any moment in history. And there is something cool about saying - I come from the land of a billion sparks.
Thank You.

आपके पत्र

I and my family members have read the March'11 issue of Chirping Sparrow. Anant vandana to Param Pujya Gurudev and abhinandan to your team. Gurudev's advice to devote oneself for the development of our country-culture-religion and his message of friendship-affection-goodwill to all is very pertinent and need of the time. All the articles in the magazine are excellent. Please try to publish it bimonthly. Wish all the best to you and your team.

Samiksha Jain, Guna

Received today the new issue of 'Chirping Sparrow' in my hostel. Feeling very happy. Want to say a million thanks for sending this magazine on time. First thing I'd like to say is that this new issue of Chirping Sparrow is too good. Last page- *Mahatvapurna Chitti* can be read by the postman also. I mean it is in Hindi and any one can read it and can get the message. The hidden message in the story 'One Extra Bedroom' is the reality of today. The story *Parmarth* is also very good. Each and every page of Chirping Sparrow has some message and I feel proud to receive this magazine.

Anu Banzal, Deori

अनुरोध

- आपके लिए Chirping Sparrow निःशुल्क भेजा जा रहा था.
- यदि आप इसे जारी रखना चाहते हैं तो 30 मार्च 2012 तक हमें पत्र लिखकर सूचित करें.
- हमसे पत्राचार करते समय हमेशा अपने रजिस्ट्रेशन नम्बर का उल्लेख करें.
- Chirping Sparrow के बारे में अन्य कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य अवगत कराएं.
- अपना पता, फोन नम्बर, ई–मेल, बदलने पर तत्काल हमें सूचित करें.
- Chirping Sparrow आप हमारी बेब साईट पर भी देख सकते हैं और प्रिंट ले सकते हैं.

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

सबसे सुन्दर बच्चा

देवता जूपिटर ने एक दिन समस्त जानवरों को अपनी सभा में बुलाया और कहा – "तुम सब कल अपने–अपने सबसे सुन्दर बच्चों के साथ सभा में आओ, जिसका बच्चा मुझे सबसे सुन्दर लगेगा, उसे मैं बड़ा पुरस्कार दूंगा। दूसरे दिन सभी जानवर अपने नन्हे–मुन्हे बच्चों के साथ सभा में आए। एक बंदरिया भी अपने नन्हे से बच्चे को अपनी छाती से चिपका कर लायी। उसका बच्चा इतना छोटा था कि बाल भी नहीं निकले थे और वह बिल्कुल छिले हुए उबले आलू जैसा दिख रहा था। इतने सारे लोगों के बीच पहली बार आकर बच्चा बहुत सकपका गया था और अपनी माँ को कसकर जकड़े हुए था।

वहाँ उपस्थित अन्य जानवरों और देवताओं ने जब बंदरिया के बच्चे को देखा तो वे सभी हंसकर लोटपोट हो गए, लेकिन बंदरिया ने अपने बच्चे को बड़े प्यार से दुलारा और जूपिटर से कहा – "आप जिसे चाहें उसे सबसे सुन्दर बच्चे का पुरस्कार दे दें, लेकिन मेरे लिए तो मेरा बच्चा ही सबसे सुन्दर है।"

BOOK-POST

Chirping Sparrow

Year - 9, Issue - I, Oct. - Dec. 2011

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

From
MAITREE SAMOOH
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com,
samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com
http://maitreesamooh.blogspot.com
Mob.: 94254-24984

To, ______________________

____

____